नव भारत
1934 से
सतना संस्करण 27वां वर्ष

हम साक्षी हैं...

नवभारत, सतना का 27 वें वर्ष में प्रवेश

दो बार के वित्त मंत्री के राजनीतिक पराभव के ...

प्रदेश में सुन्दरलाल पटवा के नेतृत्व में बनी दो बार सरकार के वित्त मंत्री रहे रामहित गुप्त के राजनैतिक पराभाव के भी हम साक्षी हैं.श्री गुप्त 20 13 में हमारे बीच से गए.इस दौरान प्रदेश में उन्ही की पार्टी की सरकार रही फिर भी उन्हे कोई नया दायित्व नहीं सौपा गया. संघ की मजबूत पृष्टभूमि से जनसंघ में आए श्री गुप्त अपनी सादगी और बिना दिखावे के जीवन के लिए हमेशा याद किए जाएगे.उन्होने कभी अपने रूतबे और क्षमता का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन कभी नहीं किया.सहज सरल जीवन शैली के समर्थक रहे श्री गुप्त को पार्टी ने जब पूछना बन्द कर दिया तो उन्होने कभी इस पर कोई आपत्ति दर्ज नहीं की.

नानाजी की भारतरत्न से लेकर देहदान की कहानी के ...

राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की कहानी का साक्षी हम तब से हैं.जब से सतना संस्करण का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ.हालांकि उनका चित्रकूट में आगमन काफी पहले हो गया था.नानाजी का जन्म परतंत्र देश में तब के हैदराबाद स्टेट के परभानी जिले में शरद पूर्णिमा के दिन 11अक्टूबर 1916 को हुआ था.मराठी भाषी परिवार में पैदा होने के कारण प्रारम्भिक शिक्षा इसी भाषा में हुई बाद में उन्हे पढ़ाई के लिए बिरला कालेज में पढ़ने का मौका भी स्कालरशिप के माध्यम से मिला.संघ प्रमुख डां हेडगेवार के करीबी होने के कारण बाद में उन्हे उत्तरप्रदेश का प्रचारक बनाया गया.सारा जीवन समाजसेवा को समर्पित करने वाले नानाजी जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक डां श्यामप्रसाद मुखर्जी के भी करीबी सहयोगी रहे.डां मुखर्जी के निधन के बाद उन्होने उनकी स्मृति में 1969 में दीनदयाल शोध संस्थान का सृजन किया.शेष सारा जीवन इसी संस्थान के माध्यम से उन्होने समाजसेवा के अनेक कार्य किए.उनके कार्यो के आधार पर उन्हे समाजसेवा के क्षेत्र में काम करने के लिए दो बार राज्यसभा में सरकार ने मनोनीत सदस्य की हैसियत प्रदान की.सन् 1999 में उन्हे समाजसेवा के लिए पद्मभूषण तथा मरणोपरांत सन् 2019 में भारतरत्न सम्मान से सम्मानित किया गया.नानाजी ने अपने जीवन काल में ही अपनी पार्थिव देह को दिल्ली की संस्था दधिची को दान कर दी थी.ताकि मेडिकल के छात्र उनके शरीर से अध्ययन कर सके.अजीवन अविवाहित रहे नानाजी ने कभी किसी को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया.उनका कहना था कि उनके कार्यों को आगे बढ़ाने का जिम्मा समाज का होगा.

समाजवादी राजनीति की अन्तिम सीढ़ी रामानन्द के ...

प्रदेश की राजनीति में अपनी सीधी सपाट बोली की पहचान रखने वाले सतना के दो बार रहे सांसद रामानन्द सिंह कभी प्रदेश में वन और स्थानीय शासन मंत्री भी रहे थे. किसान पृष्ठभूमि से राजनीति में आए श्री सिंह ने अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य राजनीति के माध्यम से लोगों की सेवा करना ही रखा था.प्रदेश में भाजपा की सत्ता आने के बाद हासिए में पहुच गए श्री सिंह को अपनों ने ही भूला दिया.उन्हे इस बात का रंज हमेशा रहा कि पार्टी ने उनका उपयोग किया फिर किसी काबिल नहीं समझा.हम साक्षी हैं उनके राजनैतिक उतार चढाव के जब वो इस दुनिया से विदा हुए तो उनके करीबियों ने भी उनका साथ छोड दिया.

सोलर प्लांट से दिल्ली की मैट्रो चलने के ...

विन्ध्य हमेशा से ऊर्जा का बडा गढ़ रहा है.वैकल्पिक ऊर्जा के मामले में भी देश और दुनिया के साथ कदम मिलते चल रही व्यवस्था में बदबार का सोलर प्लांट के बनने और उसके चालू होने के हम साक्षी है.वर्तमान प्रतिदिन 750 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला यह प्लांट देश क्या एशिया का सबसे बडा प्लांट कहा जा रहा है.इस प्लांट से बनने वाली बिजली ग्रिड के माध्यम से सीधे दिल्ली मैट्रों को उपलब्ध कराई जा रही है.यह कहे कि दिल्ली मैट्रों विन्ध्य में पैदा होने वाली बिजली से चल रही है तो गलत नहीं होगा.हालांकि निजी पूंजीनिवेश के माध्यम से किए गए इस प्रयास का फायदा निजी कम्पनियों को ज्यादा हो रहा है.फिलहाल सरकार यह प्रयास कर रही है कि आसपास के कुछ क्षेत्रों को भी बिजली इसी प्लांट से दी जा सके.

टाइगर सफारी के रूप में हुई विन्ध्य में सफेद शेर की वापसी के ...

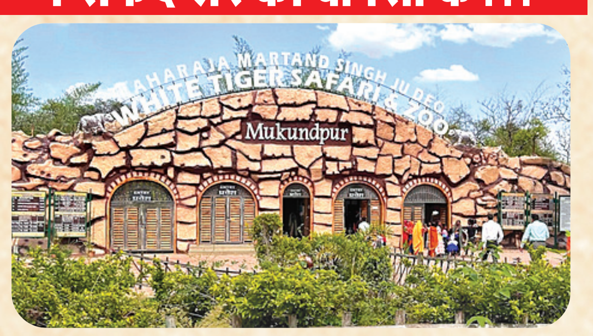

पिछले दो दशकों की विन्ध्य की उपलब्धियों की अगर चर्चा की जाए तो मैहर जिले के अमरपाटन तहसील में स्थापित महाराजा मार्तण्ड सिंह टाइगर सफारी मुकुन्दपुर सवसे बडी चीज विन्ध्य की जनता को मिली है.प्रदेश के वर्तमान उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल तब के वन मंत्री के विशेष प्रयासों से बने इस स्थान पर वर्षों बाद दुनिया को सफेद शेर देने वाली धरती में एक बार फिर उसकी दहाड़ गुंजी.नौ साल पहले स्थापित इस सफारी में लोग खुले में शेर के दीदार कर सकते है. हर वर्ष हजारों की तादाद में बढ़ा रही पर्यटकों संख्या इसके विस्तार पर सरकार और अधिकारियों को हमेशा गम्भीर बनाए रखती है.

बाणसागर बांध नहीं, महासागर जैसा दिखाई देने के ...

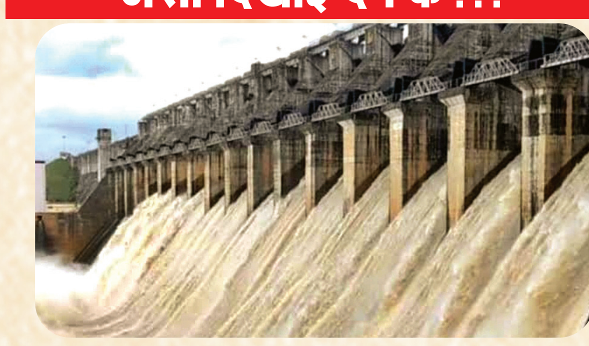

वर्षो से लम्बित बहुउद्देश्यीय परियोजना की सौगात के हम साक्षी है.बाणसागर परियोजना की नीव पूर्व प्रधानमंत्री मुरारजी भाई देसाई ने सन् 1977 में रखी थी.तब से निर्माणाधीन इस परियोजना का लोकार्पण 25 दिसम्बर 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने किया था.सम्भवतया श्री बाजपेयी का यह अन्तिम बडा सार्वजनिक कार्यक्रम था.इस कार्यक्रम में प्रदेश के पूर्वमुख्यमंत्री सुन्दर लाल पटवा भी मौजूद थे.इस परियोजना के पूरे हो जाने से विन्ध्य सहित बिहार और उत्तरप्रदेश की लाखों एकड़ प्यासी धरती को पानी मिला.इससे निकली नहरों से रीवा,सीधी व सतना की हजारों किसानों के चेहरे खिल गए.

चित्रकूट विकास के लिए बने न्यास के ...

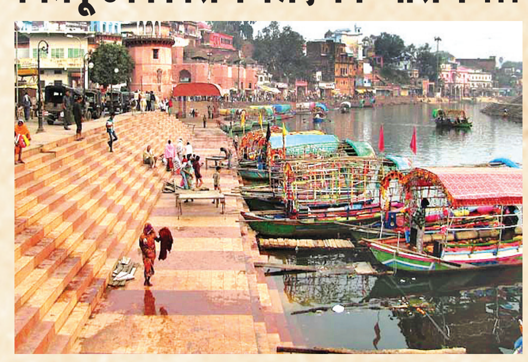

विन्ध्य भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट को अयोध्या की तर्ज पर विकसित करने का लक्ष्य लेकर प्रदेश के मुखिया डां मोहन यादव ने समग्र विकास की कल्पना के साथ न्यास का गठन कर विकास की गतिविधियों को गति दिया है.वर्तमान में चित्रकूट की परिक्रमा पथ को विकसित किए जाने के साथ-साथ पूरे क्षेत्र को चौडी-चौडी सड़कों से जोडा जा रहा है.जंगल,नदी पहाडों से घिरे चित्रकूट के हो रहे विकास कार्यों के हम प्रारम्भ से ही साक्षी रहे है.इस मामले में यही कोशिश रही हैकि इसका विकास तपोभूमि के रूप में ही हो ताकि लोगों को उन परिस्थितियों का आभास हो जिनमें भगवान राम पूरे 12 वर्ष रहे हैं.

गुलशेर अहमद के भी अपनी छाप छोड़ने के ...

प्रदेश विधानसभा के कभी अध्यक्ष रहे बैरिस्टर गुलशेर अहमद के कार्यों के भी हम साक्षी हैं.श्री अहमद कांग्रेस की राजनीति में अल्पसंख्यक वर्ग के बडे नेता होने के कारण जब तक हमारे बीच रहे सार्वजनिक तौर पर हमेशा सक्रिय रहे.नवभारत सतना संस्करण की प्रथम कापी श्री अहमद को ही समूह के संचालकसुमीत माहेश्वरी ने यह कहते हुए सौपी थी कि आज से यह समाचार आप लोगों का हुआ.इसे आप जैसा चाहे वैसा बनाए.1993 में हिमांचल प्रदेश के नौवें राज्यपाल के रूप में नियुक्त हुए श्री अहमद ज्यादा दिन नहीं रह सके राजनैतिक परिस्थितियो के कारण उन्हे अपने पद से त्यागपत्र देना पडा.

विन्ध्य के प्रदेश को दो मुखिया देने के ...

हम साक्षी हैं प्रदेश को दो मुखिया देने वाले विन्ध्य में उनके राजनैतिक जीवनकाल में हुए घटनाक्रम के बाद प्रदेश में बनी संविद सरकार के मुखिया के रूप में सबसे पहले विन्ध्य प्रदेश के सबसे बडे कांग्रेस नेता कप्तान अवधेश प्रताप सिंह के पुत्र गोविन्द नारायण सिंह के जीवन चक्र के. श्री सिंह राजनीतिशास्त्र के अच्छे विद्यार्थी थे.उन्होने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र में परास्नातक की डिग्री हासिल की थी.25 जुलाई 1920 को सतना जिले के रामपुर बाघेलान में जन्में श्री सिंह तब अंग्रजो द्वारा आयोजित आई सी एस सी परीक्षा को पास करने वाले लोगों में शामिल थे.हालांकि आजादी के पृष्ठभूमि में पाले बढ़े श्री सिंह को अग्रेजों के अधीन काम करने वाली व्यवस्था कभी रास नहीं आयी.ऐंसी परिस्थितियों उन्होने कांग्रेस का दामन थाम पिता के दायित्वों को ही सर्वोपरि माना.प्रदेश विधानसभा में सन्1963 से 67 तक द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व वाली सरकार में सिंचाई विभाग के राज्य मंत्री रहे.बाद में बदले राजनैतिक समीकरणों में उन्होने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर लोकसेवा दल बनाया .विपक्ष का सहयोग मिलने से संविद सरकार का गठन किया जिसके मुख्यमंत्री के रूप में उन्हे विधायकों ने 30 जुलाई 1967 को प्रदेश का मुखिया बना दिया गया.

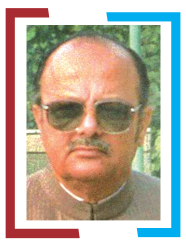

पिछड़ी राजनीति को इंद्रजीत द्वारा दिशा देने के ...

प्रदेश की राजनीति में कुवंर अर्जुन सिंह के करीबियों में विन्ध्य के नेता इन्द्रजीत कुमार का नाम सबसे ऊपर लिया जाता है. राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के विभाजन के बाद बनी तिवारी कांग्रेस के प्रतिनिधि न होते हुए भी उनके और पार्टी के प्रति संतुलन बनाकर काम करने की सीख देने वाला कोई दूसरा चेहरा फिलहाल नजर नहीं आता.कांग्रेस सरकार में मंत्री होते हुए पद की चिन्ता किए बिना अपने राजनैतिक संरक्षक के प्रति किस प्रकार से आस्था व्यक्त की जाती है.इसके साक्षी हम है.विन्ध्य में पिछडों को सक्रिय राजनीति से जोडने का जो प्रयासश्री कुमार ने किया उसे कभी भूलाया नहीं जा सकता है.

सफेद शेर के नाम से मशहूर दादा के ...

प्रदेश की राजनीति में अलग पहचान रखने वाले पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीयुत श्रीनिवास तिवारी के न रहने से जो राजनैतिक रिक्ता विन्ध्य में पैदा हुई उसकी भरपायी कभी नहीं हो पायी.पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिह उन्हे विन्ध्य का मुख्यमंत्री ही हमेशा कहा करते थे.पेशे से वकील श्री तिवारी की कानूनी समझ इतनी मजबूत थी कि उनके साथ काम करने वाले लोग कहते थे कि दादा की नोटिंग को कभी चुनौती नहीं दी जा सकती है.वर्षों तक राजनीति के क्षत्रप रहे श्री तिवारी की गैरमौजूदगी का एहसास अभी होता रहता है.

बाघ विहीन पन्ना टाइगर रिजर्व के पुन : आबाद होने के ...

हम साक्षी हैं पन्ना टाइगर रिजर्व को वर्ष 2009 में बाघ विहीन घोषित किया गया था, वहां टी-2 इकलौती बाघिन है जिसने पन्ना के बाघों की मूल नस्ल को बचाने में कामयाब हुई है। इसलिए यह बाघिन पन्ना टाइगर रिजर्व के लिए खास महत्व रखती है। पन्ना टाइगर रिजर्व को शून्य से शिखर तक पहुंचाने में भी इस बाघिन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यही वजह है कि इस बाघिन को पन्ना की सफलतम रानी कहा जाता है। बाघ पुनर्स्थापना योजना के तहत वायु सेना के हेलीकॉप्टर से इस बाघिन को 9 मार्च 2009 में कान्हा से पन्ना लाया गया था। पन्ना में कामयाबी का झंडा फहराने वाली इस बाघिन ने यहां अन्य दूसरी ब्रीडिंग बाघिनों की तुलना में सर्वाधिक शावकों को जन्म दिया है। पेंच के नर बाघ टी-3 को फादर ऑफ़ दि पन्ना टाइगर रिजर्व का ख़िताब दिया गया था, इस लिहाज से पन्ना की सफलतम रानी बाघिन टी-2 को यदि च्मदर ऑफ़ दि पन्ना टाइगर रिजर्वज्ज कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस बड़ी सफलता के सूत्रधार तत्कालीन संचालक आर श्रीनिवास मूर्ति रहे जिन्होंने पन्ना अभियान के बाद देश और दुनिया में इस क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की।

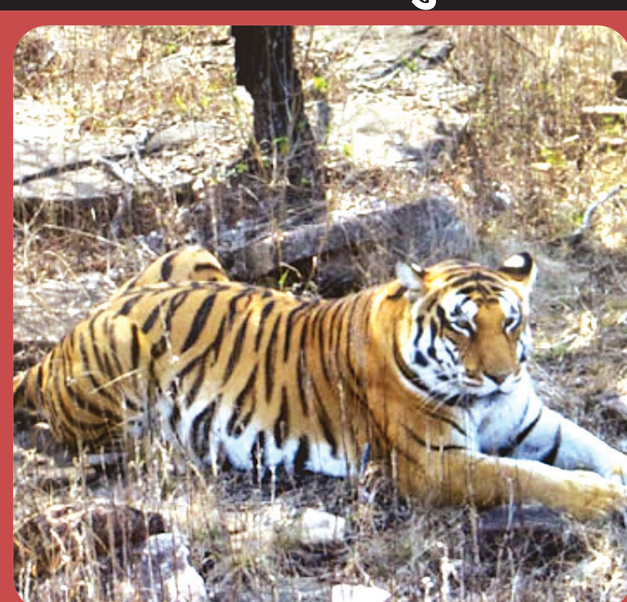

नर्मदा की दायीं तट नहर की पहल के ...

हम साक्षी है गंगा को नर्मदा से मिलाने की होने वाली पहल के.कभी ठडे बस्ते में बंध चुकी इस परियोजना को क्रियान्वित कराने में नवभारत को मजबूत पहल करनी पडी थी.हालांकि अभी भी पानी जिले की सीमा तक नहीं पहुचा है.फिर भी जिस प्रकार की पहल हो रही है.उससे लगता है साल के अन्त तक यह पानी विन्ध्य के किसानों को मिल जाएगा.जानकारों का ऐसा आकलन है कि पानी पहुचने के बाद विन्ध्य के किसान पंजाब की तरह खेती करने लगेंगे.